

॥ श्री खाटू श्याम जी शीश दान कथा ॥

बर्बरीक के समर्पण का प्रसंग

प्रचलित लोककथा का सरल हिंदी पुनर्कथन

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ श्री खाटू श्याम जी शीश दान कथा ॥

प्रचलित भक्त-परंपरा का सरल हिंदी पुनर्कथन।
संवाद और घटनाक्रम के वर्णन विभिन्न कथाओं में कुछ भिन्न मिलते हैं।

महायुद्ध की ओर यात्रा

प्रचलित श्याम कथा में बर्बरीक भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र माने जाते हैं। वे महान धनुर्धर और उदार हृदय वाले वीर थे। जब उन्हें कुरुक्षेत्र में होने वाले युद्ध का समाचार मिला, तो उन्होंने वहाँ जाने की इच्छा प्रकट की। माता से आशीर्वाद लेते समय उन्होंने हारने वाले पक्ष की सहायता करने का वचन दिया।

ब्राह्मण के वेश में श्रीकृष्ण

बर्बरीक अपने धनुष और तीन दिव्य बाणों के साथ आगे बढ़े। मार्ग में भगवान श्रीकृष्ण ब्राह्मण के रूप में उनसे मिले। उन्होंने पूछा कि इतने बड़े युद्ध में केवल तीन बाण कैसे पर्याप्त होंगे। बर्बरीक ने बताया कि उनके बाण साधारण नहीं हैं और उनकी शक्ति युद्ध का परिणाम बदल सकती है। श्रीकृष्ण ने उनकी सामर्थ्य परखने का निश्चय किया।

॥ जय श्री श्याम ॥

॥ श्री खाटू श्याम जी शीश दान कथा ॥

प्रचलित भक्त-परंपरा का सरल हिंदी पुनर्कथन।
संवाद और घटनाक्रम के वर्णन विभिन्न कथाओं में कुछ भिन्न मिलते हैं।

पीपल के पत्तों की परीक्षा

ब्राह्मण-रूपी श्रीकृष्ण ने पास के पीपल के सभी पत्तों को एक बाण से भेदने के लिए कहा। उन्होंने एक पत्ता अपने पैर के नीचे छिपा लिया। बर्बरीक का बाण वृक्ष के पत्तों को भेदकर छिपे हुए पत्ते की ओर बढ़ा। बर्बरीक ने निवेदन किया कि वे अपना पैर हटा लें। इस परीक्षा से उनके बाण की विलक्षण शक्ति प्रकट हुई।

प्रतिज्ञा से उत्पन्न दुविधा

श्रीकृष्ण ने पूछा कि वे किस सेना का साथ देंगे। बर्बरीक ने माता को दिए अपने वचन का स्मरण कराया। कथा के अनुसार श्रीकृष्ण ने समझा कि बर्बरीक जिस ओर लड़ेंगे, दूसरी ओर की सेना निर्बल हो जाएगी। फिर वे उसी निर्बल पक्ष का साथ देने लगेंगे। इस प्रकार पक्ष बदलते रहने से दोनों सेनाओं का विनाश हो सकता था।

॥ जय श्री श्याम ॥

॥ श्री खाटू श्याम जी शीश दान कथा ॥

प्रचलित भक्त-परंपरा का सरल हिंदी पुनर्कथन।
संवाद और घटनाक्रम के वर्णन विभिन्न कथाओं में कुछ भिन्न मिलते हैं।

दान की माँग और समर्पण

तब श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से दान में उनका शीश माँगा। बर्बरीक ने उनसे वास्तविक स्वरूप दिखाने की प्रार्थना की। श्रीकृष्ण के दर्शन करके उन्होंने अपना शीश अर्पित किया। साथ ही युद्ध का अंत तक दर्शन करने की इच्छा व्यक्त की। श्रीकृष्ण ने उनके शीश को ऊँचे स्थान पर स्थापित कराया, जहाँ से वे पूरे संग्राम के साक्षी बने।

शीश के दानी का स्मरण

भक्त परंपरा में इस प्रसंग के कारण बर्बरीक शीश के दानी कहलाते हैं। आगे की कथा में श्रीकृष्ण उन्हें अपने श्याम नाम से पूजे जाने का वरदान देते हैं। उनका स्मरण त्याग, विनय और वचन के महत्व से जुड़ा है।

इस कथा के दान-भाव को दैनिक जीवन में उदारता, सेवा और करुणा से अपनाया जा सकता है। भूखे को भोजन, दुखी को सहारा और जरूरतमंद को सहायता देना भी भक्तिपूर्ण समर्पण की अभिव्यक्ति है।

॥ श्री खाटू श्याम जी शीश दान कथा सम्पूर्ण ॥